**International Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72**
**www.allsubjectjournal.com**
**Volume 3; Issue 5; May 2016; Page No. 162-164**

# भारतीय लोकतंत्रः उपलब्धियां तथा चुनौतियां एक विश्लेषण

**[1] प्रभात कुमार ओझा [2] तौफीक अहमद**

[1] स्नातकोत्तर छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
[2] वरिष्ठ शोध छात्र मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद।

**शोध पत्र सार**
अपनी सभ्यता और संस्कृति के विकास क्रम में मानव ने अपने समक्ष जिन प्रणालियों तथा मूल्यों की स्थापना की है, उनमें लोकतंत्र का स्थान निश्चय ही अतिविशिष्ट है। अपनी सम्पूर्ण विकास यात्रा के दौरान मानव के लिए उसने, स्वयं की पहचान, गरिमा और आत्मसम्मान की खोज एक अलग प्रश्न रहा है और लोकतंत्र इस प्रश्न का यथोचित उत्तर बनकर उपस्थित हुआ है– न केवल एक प्रणाली यह व्यवस्था के रूप में, बल्कि मूल्यों के रूप में भी यह मनुष्य के विवेक पर आधारित एक शासन प्रणाली भी है तथा मनुष्य के रूप में जीवन जीने की गरिमापूर्ण पद्धति भी। भारत में भी स्वतंत्रता के पश्चात लोकतंत्र को अपनाया गया लेकिन उसका राजनीतिक पक्ष मात्र ही। फिर संविधान की प्रस्तावना, नाकरिकों को प्रदत्त मूल अधिकारों व नीतिनिर्देशक तत्वों के माध्यम से लोकतंत्र के सामाजिक आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का संकल्प लिया गया। इसे सम्पर्णता में देखें तो हमारे समक्ष कई मूलभूत प्रश्न उपस्थित होते हैं, जैसेः क्या भारत का लोकतंत्र राजनीतिक पहलू के साथ–साथ सामाजिक व आर्थिक संदर्भों को अपने साथ जोड़ पाया है? क्या भारतीयों ने जीवन पद्धति के रूप में इसे स्थापित करने में सफलता पाई है? क्या भारतीय लोकतंत्र विश्व, जो कि लगातार आतंकवाद से त्रस्त है, को एक नई दिशा दिखा सकता है? इन सभी प्रश्नों के आलोक में हम भारतीय लोकतंत्र का मूल्यांकन करेंगे तथा उसकी उपलब्धियों व चुनौतियों की एक स्पष्ट तस्वीर अपने सामने रखने की कोशिश करेंगे।

**मुख्य शब्दः–** भारतीय लोकतंत्र, मानव विकास, आर्थिक उद्देश्य, जीवन पद्धति, आतंकवाद, राजनीतिक पहलू, नीति निर्देशक तत्व

**मूल प्रतिपादन**
सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि लोकतंत्र क्या है। सामान्यतः यह एक शासन प्रणाली के रूप में आधुनिक विचार है जिसमें जनता ही निर्णय करती है कि शासन कैसे चलाया जाय। यह मात्र लोकतंत्र का राजनीतिक पक्ष है। जब हम लोकतंत्र को जीवन पद्धति व मूल्यों के रूप में देखते हैं तो व्यापक सामाजिक, आर्थिक उद्देश्य इसमें निहित हो जाते हैं। जब हमारे सोचने का तरीका उदारवादी हो, हम मनुष्य की गरिमा का व उसके विवेक का सम्मान करें, तो हम कहते हैं कि यह लोकतांत्रिक व्यक्तित्व है। जब यह विचार पद्धति सम्पूर्ण समाज व संस्कृति के विविध पक्षों में स्थापित हो जाती है तो क्रमशः लोकतांत्रिक समाज व संस्कृति का निर्माण होता है। जहां तक भारत का सवाल है तो भारत में संस्कृति के रूप में लोकतंत्र हमेशा विद्यमान रहा है। भारतीय उपनिषदों में उल्लिखित 'मुण्डे–मुण्डे मतिभिन्ना'' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'' स्पष्ट करते हैं कि भारतीय संस्कृति में हमेशा से ही लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाया जाता रहा है। फिर इसका स्वयं में सबसा बड़ा प्रमाण है। भारत की मोजाइक संस्कृति जो तरह–तरह के विविधताओं को धारण करती आई है। तथा अन्तर्विरोधों को पचाते हुए एक नये रूप में निखरती आई है। उल्लेखनीय है कि किसी भी सामाजिक संस्कृति या मोजाइक संस्कृति का विकास लोकतांत्रिक मूल्य पद्धति के अभाव में नहीं हो सकता है और इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति अद्वितीय है।

न केवल सांस्कृतिक विरासत के रूप में, बल्कि स्वंतत्रता संघर्ष के दौरान भी भारतीयों ने लोकतंत्र के विविध आयामों के प्रति अपनी स्वतंत्र व मौलिक दृष्टि विकसित की। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष न केवल सत्ता प्राप्ति का वरन् एक विचारात्मक संघर्ष भी था, जिसमें स्पष्ट सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक दर्शन थे और ये सभी दर्शन लोकतांत्रिक मूल्यों से ही अनुप्राणित थे। वैचारिक स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, महिला उत्थान, दलित उत्थान, सामाजिक–आर्थिक न्याय, बंधुता जैसे मूल्य हमने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान अर्जित किये और इस तरह भारतीय नेताओं के समक्ष भविष्य में लोकतांत्रिक भारत का स्पष्ट स्वरूप उभर चुका था। जब भारत 15 अगस्त, 1947 ई0 को तो यहां राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना की गई। लेकिन हमारे समक्ष चुनौती थी–आर्थिक व सामाजिक न्याय को वास्तविक स्वरूप प्रदान करना। हमारे नीति निर्माता इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे। अतः उन्होंने संविधान के विभिन्न प्रावधानों के माध्यम से सामाजिक–आर्थिक संरचना में परिवर्तन के माध्यम के रूप में देखा गया और संरचनात्मक व आधारभूत बदलाव की यह प्रक्रिया आज तक जारी है। आज़ादी के 60 वर्षों के इस कालखण्ड में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष कई तरह के अनुभव आए। कुछ गौरवशाली स्वर्णिम क्षण भी आए जो उपलब्धियों से परिपूर्ण थे, तो कुछ ऐसी चुनौतियां भी आई जिसने हमारे लोकतंत्र को आत्म–मूल्यांकन करने हेतु बाध्य भी किया। जहां तक भारतीय लोकतंत्र की उपलब्धियों का सवाल है तो उसे कई स्तरो पर देखा जा सकता है। एक शासन प्रणाली के रूप में भारतीय लोकतंत्र निश्चय ही परिपक्व हो चुका है। स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद भारत के प्रत्येक नागरिक को मताधिकार प्रदान किया गया तथा स्वतंत्र निर्वाचन की जो व्यवस्था की गई थी वह लगातार अपनी भूमिका का निर्वहन करती आ रही है। भारत में सत्ता का परिवर्तन हमेशा शांतिपूर्ण तरीके से और आम निर्वाचन के माध्यम से होता रहा है। इस प्रकार इसने स्थिरता व परिपक्वता को प्राप्त किया है। जब हम इस उपमहाद्वीप के अन्य देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश से तुलना करते हैं तो देखते हैं। कि वहां लगातार संविधान का खण्डन हुआ तथा जनमत की उपेक्षा करते हुए सैनिक शासन की स्थापना की गई लेकिन भारतीय लोकतंत्र ने हमेशा जनादेश का सम्मान किया। कोई भी राजनीतिक दल जीता या हारा हो लेकिन जीत हमेशा भारतीय मतदाताओं व लोकतंत्र की ही हुई। फिर भारतीय लोकतंत्र ने हमेशा अपने राजीतिक आधार का विस्तार किया। जिन वर्गों को हमेशा राजनीतिक शासन प्रणाली से वंचित रखा गया था। उन्हें लगातार राजनीति की मुख्य धारा में शामिल होने का अवसर दिया गया। आज भारतीय लोकतंत्र किसी वर्ग विशेष नहीं या किसी क्षेत्र विशेष नहीं बल्कि संपूर्ण समाज व

सम्पर्ण देश की आत्मा एवं आवाज़ बनकर उभरा है। फिर भारतीय लोतिंत्र को तृणमूल स्तर पर भी स्थापित किया गया। महिलाओं को तथा ग्रामीण जनता को स्वशासन का अधिकार देकर भारतीय लोकतंत्र ने जता दिया ि कवह प्रगतिशील है, जीवित है और राजनीतिक परिवर्तनों का सशक्त माध्यम है न कि यथास्थितिवादी शासन प्रणाली। जब हम सामाजिक स्तर पर भारतीय लोकतंत्र की उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं तो भी काफी प्रगति दिखती है। दलितोत्थान जो कि हमारे समाज के लिए अभिशाप रहा है व स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी लगातार आवाज़ उठाई गई, को संस्थागत रूप प्रदान किया गया। छुआछूत को अपराध घोषित किया गया। फिर समाज में पिछड़े वर्गों अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों व अन्य पिछड़े वर्गों को भी सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया ताकि वे लोकतंत्र के सामाजिक व समतावादी स्वरूप का जीवंत अनुभव कर सकें। यह संरक्षणात्मक विभेद सामाजिक न्याय की धारणा के अनुकूल ही था। फिर महिलाओं से सम्बन्धित मुद्दों पर भी हमने लगातार कार्य किया। ''हिन्दू कोड बिल'' इस संदर्भ में मील का पत्थर है। दहेज निषेध अधिनियम इस परिप्रेक्ष्य में पारित किया गया लेकिन इस क्षेत्र में और भी कार्य किया जाना शेष है। कल्याणकारी राज्य की अवधारण के तहत बच्चों, वृद्धों तथ विकलांगों को लगातार सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराई जा रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता व आवास जैसे समाजगत सुविधाओं का लगातार विस्तार किया जा रहा है। अल्पसंख्यकों को संविधान के माध्यम से शिक्षा व संस्कृति की रक्षा का अधिकार दिया गया; यह सामाजिक लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण आधार बना। धर्मनिरपेक्षता का भारतीय दृष्टिकोण भी स्थापित किया गया। लोकतंत्र व आर्थिक न्याय हमेशा परस्पर जुड़े हैं। पंडित नेहरू ने इस संदर्भ में कहा था, ''आर्थिक व सामाजिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र व्यर्थ है।'' साथ ही उन्होंने चेतावनी भी दी थी कि यदि जल्द से जल्द सामाजिक–आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं की गई तो राजनीतिक लोकतंत्र को बनाए रखना मुश्किल होगा।

भारतीय लोकतंत्र में हमेशा इस वास्तविकता को ध्याय में रखा गया। इसे वास्तविकता स्वरूप प्रदान करने के लिए स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात् भूमि सुधार कार्यक्रम लागू किए गए तथा जमीदारी प्रथा का अंत कर दिया गया। हांलाकि यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल ही रहा। फिर बंधुआ मजदूरी का अंत किया गया। सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों तथा विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के तहत गरीबी तथा बेरोजगारी जैसी विभिन्न विकराल समस्याओ पर लगातार जोर किया गया।

भारत ने खाद्यान्न, दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की। प्रथम हरितक्रान्ति का योगदान उल्लेखनीय रहा तथा द्वितीय हरित क्रान्ति को अब उसकी अगली कड़ी के रूप में प्रस्तुत किए जाने की योजना है। औद्योगिक क्षेत्र तथा सड़क, बिजली, परिवहन, सिंचाई, वायु व जल परिवहन के क्षेत्र में, अंतरिक्ष एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय सफलताएं हासिल की हैं तथा आज यह विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। लोकतंत्र वैचारिक स्वतंत्रता के लिए सबसे अच्छा वातावरण उपलब्ध कराता है। इस संदर्भ में मीडिया एक महत्वपूर्ण अवयव है। भारतीय लोकतंत्र ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रतापर हमेशा बल दिया है। यही कारण है कि यहां मीडिया का व्यापक प्रसार हुआ है। मीडिया ने भी अपनी धर्मनिरपेक्ष भूमिका निभाते हुए कई उपलब्धियां हासिल की है और भारतीय लोकतंत्र को परिपक्व बनाने में, उसकी विसंगतियों पर चोट करने में मीडिया की अहम भूमिका रही है। सूचना अधिकार इसी परिप्रेक्ष्य में एक अगली कड़ी है।

लेकिन भारतीय लोकतंत्र के समक्ष केवल उपलब्धियां ही नहीं है। उसने समय के साथ–साथ कई चुनौतियों का सामना किया है। ये चुनौतियां अपने स्वरूप में आंतरिक और बाह्य दोनों है। आज भी हमारे लोकतंत्र को कई प्रश्नों का समाधान करना है, जिनके समाधान के बिना संभवतः हमारी लोकतांत्रिक संस्कृति, हमारा लोकतांत्रिक समाज स्वयं को माफ नहीं कर पाएगा।

आज भारत की सबसे बड़ी चुनौतियां राजनीतिक स्तर पर उपस्थित है। स्थिरता व परिपक्वता के बावजूद हमारी राजनीतिक प्रणाली में गहरी विसंगतियां पैदा हो गई है। राजनीति आज धर्म, जाति, क्षेत्र, संप्रदाय जैसे संकीर्ण मुद्दों पर आधारित हो गई है तथा विकास सम्बन्धी वास्तविक मुद्दे गौण हो गए हैं। आज चुनावों की निष्पक्षता पर भी संकट मंडरा रहा है। चूंकि भारतीय आम चुनाव आज धनबल एवं बाहुबल पर आश्रित होते जा रहे हैं। धन चुनावों में अनैतिक भूमिका निभा रहा है। सत्ता की राजनीतिक ने अपराधीकरण की समस्या को भी बढ़ाया है फलतः राजनीतिक नेतृत्व का संकट पैदा हो गया है। आज दागी व्यक्ति संसद के साथ–साथ सरकार में भी शामिल हो रहे हैं। इससे राजनीतिक दलों में नैतिकता का संकट भी पैदा हुई है तथा कार्य संस्कृति में गिरावट आई है।

भ्रष्टाचार की समस्या आज व्यापक होती जा रही है चूंकि प्रशासक, राजनीतिज्ञ व उद्योगपतियों का अवैध गठजोड़ भ्रष्टाचार की संस्कृति को लगातार बढ़ावा दे रहा है। इस संदर्भ में सूचना के अधिकार का व्यापक उपयोग किए जाने की आवश्यकता है।

वाह्य रूप से आतंकवाद तथा आंतरिक रूप से नक्सलवाद एवं प्रथकवाद एवं गंभीर खतरा बनकर भारतीय राज्य के समक्ष उपस्थित हुई है। उल्लेखनी है कि नक्सलवाद केवल कानून व्यवस्था की समस्या मात्र नहीं है, वरन् इसकी जड़े हमारी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में छिपी हैं। आतंकवाद लगातार भारतीय राज्य के समक्ष बहुविध समस्याएं उत्पन्न कर रहा है। सीमापार आतंकवाद ही अब केवल आज की समस्या नहीं रही बल्कि यह वैश्विक आतंकवाद के निशाने पर भी है। अतः भारतीय राष्ट्रराज्य को इस संदर्भ में स्पष्ट नीति बनानी होगी तथा सख्ती के साथ निबटना होगा।

प्रथकतवादी शक्तियां (उत्तर पूर्व का बोडो आंदोलन) भी भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए संकट बनी हई है। इसका भी लोकतांत्रिक तरीके समाधान करने की आवश्यकता है। भारतीय राजनीति की एक विसंगति यह है कि हमारी राजनीति में प्रणाली में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया है। संसद व विधान मण्डलों में महिलाओं को 33 प्रतिशत् राजनीतिक आरक्षण के मुद्दे पर अभी तक राजनीतिक दलों में सहमति नहीं बन पाई है।

जातिगत संघर्ष तथा सांप्रदायिकता की समस्या भी एक गंभीर चुनौती है। सत्ता की राजनीति के प्रभाव में राजनेता व धनाढ्य वर्ग आम जनता को विकास व शासन के वास्तविक मुद्दों से भटकाते हैं तथा जातिगत, सम्प्रदायगत व क्षेत्रगत मुद्दों को बल देते हैं। इस तरह की विभाजनकारी शक्तियां भारत की एकता व अखंडता के लिए लगातार चुनौती बनी हुई हैं।

आर्थिक सामाजिक क्षेत्र में अभी भी भारतीय राज्य अपेक्षित सुधार नहीं ला पाया है। महिला, दलितों व बच्चों से सम्बन्धित अधिकार पूर्णतया कार्यान्वित नहीं हो पाएं हैं। महिला आज भी घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, भ्रूणहत्या जैसी समस्याओं से जूझ रही है तथा अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। तमाम कानूनी प्रावधानों के बावजूद बाल श्रम को समाप्त नहीं किया जा सका है। दलितों के साथ ग्रामीण क्षेत्र में हिंसक कार्यवाहियां अपने आप में शर्म की बात है। आज भी भारत की 22 प्रतिशत् जनता गरीबी रेखा से नीचे रह रही है तथा अपने न्यूनतम् आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ है। वैश्वीकरण तथा मुक्त बाज़ार के दौर में सामाजिक–आर्थिक न्याय की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। मुक्त बाज़ार प्रणाली के अंतर्गत मुनाफा की प्रवृत्ति केन्द्रीय होती है। ऐसे में वंचित वर्ग के पीछे छूट जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। इस संदर्भ में भारतीय राज्य के समक्ष यह महत्वपूर्ण चुनौती है कि अर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक–आर्थिक न्याय को संपोषित किया जाय।

आज धन एवं आय की विषमता लगातार बढ़ रही है। यह विषमता दो स्तरो पर दिखती है– कुछ क्षेत्र प्रतिस्पर्धा में पीछे टूट रहे हैं तो दूसरी ओर कुछ वर्ग भी मुक्त बाजार के तीव्र प्रतिस्पर्धा के शिकार हैं। इस संदर्भ में हमें भूलना नहीं चाहिए कि आज भी कृषि अधिकाशं भारतीयों की जीविका का आधार है तथा किसानों की लगातार अधिक हत्याएं हमारे मुंह पर तमाचे के समान हैं।
हमें न्यायिक क्षेत्र में भी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। न्याय मिलने में देरी और भी अन्याय है। आज गरीबों को न्याय मिलना चुनौतीपूर्ण है। अतः भारतीय लोकतंत्र को इस दिशा में पहल करना होगा कि न्याय केवल मिलना ही नहीं चाहिए, वरन् स्पष्टतया नज़र भी आनी चाहिए। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि मीडिया को भी अपनी भूमिका पर पुनः विचार करना होगा कयोंकि बाज़ार मूलक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में वह लगातार स्थूलता की संस्कृति को बढ़ावा दे रही है तथा गंभीर चर्या की संस्कृति को पीछे धकेल रही है।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र एक प्रगतिशील एवं जीवंत लोकतंत्र के रूप में उभर कर सामने आया है। विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने के कारण तथा एक लोकतांत्रिक संस्कृति के कारण इसके समक्ष तमाम संभावनाएं हैं कि यह आने वाले समय में अपनी विसंगतियों को दूर करने में सफल होगा। इस संदर्भ में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आतंकवाद हो या नक्सलवाद, महिला उत्थान हो या दलितोत्थान, या फिर चाहे विकास की समस्याएं ही क्यों न हो; इन सभी का सर्वोत्तम एवं बेहतर विकल्प लोकतंत्र ही है। भारतीय लोकतंत्र की प्रगतिशीलता और जीवंतता के सहारे तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए अपना रास्ता स्वयं तय करेगा, यह कहने में हमें कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।